Paper - I

MT

2017 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - II - PAPER - I

Time : 3 Hours **Model Answer Paper** **Max. Marks : 80**

विभाग 1 - गद्य

उ.1. **(क) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) i) **संजाल पूर्ण कीजिए।** **2**

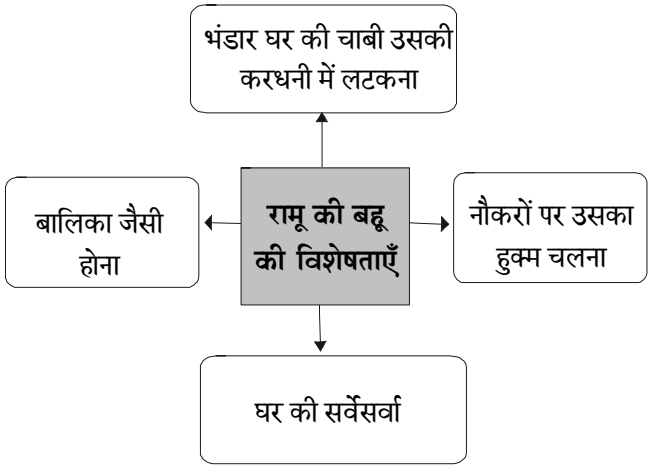

2) **संजाल पूर्ण कीजिए।** **2**

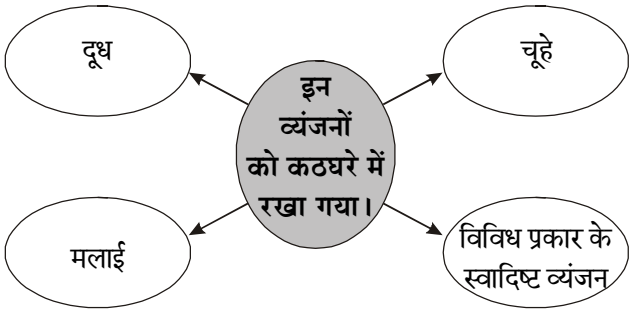

3) i) **निम्नलिखित शब्द मानक वर्तनी के अनुसार लिखिए।** **1**

(1) भन्डारघर - भंडारघर

(2) ढ़ँककर - ढँककर

ii) **रिक्त चौखट में उत्तर लिखिए।** **1**

(1) प्यार → प्यारी

(2) अमीर → अमीरी

4) कम उम्र में लड़की का विवाह कर देने से उसे कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है । उसे घर-गृहस्थी के बारे में किसी भी प्रकार का ज्ञान नहीं होता है । ससुराल आकर वह खुद को सँभाल नहीं पाती है । अत: वह रसोईघर या भंडारघर नहीं सँभाल सकती है। सबका ख्याल रखना उसके बस की बात नहीं होती है । इसीलिए कम उम्र में लड़कियों का विवाह नहीं करना चाहिए । **2**

उ.1. (ख) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) समझकर लिखिए।

i) **यह है वाणी -** **1**

(1) मनुष्य के चिंतन का फलित।

(2) चिंतन का साधन।

ii) **इन पर निर्भर है मनुष्य के जीवन का समाधान।** **1**

(1) वाणी के संयम पर।

(2) वाणी के सदुपयोग पर।

2) i) **सत्य या असत्य लिखिए।** **1**

(1) सत्य

(2) असत्य

ii) **सहसंबंध लिखिए।** **1**

चित्तशुद्धि → योगसूत्र

शरीरशुद्धि → वैद्यक

वाक्शुद्धि → व्याकरण महाभाष्य

3) i) **निम्नलिखित शब्द मानक वर्तनी के अनुसार लिखिए।**

(1) बडी - बड़ी **½**

(2) चिन्तन - चिंतन **½**

ii) **समानार्थी शब्द लिखिए।**

(1) मनुष्य - मानव ½

(2) समाधान - हल ½

4) मानव जीवन में वाणी का विशेष महत्तव है । वाणी मनुष्य को ईश्वर द्‌वारा दी गई अनमोल देन है । वाणी ही एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्‌वारा मनुष्य अपने विचारों को व्यक्त कर सकता है । मनुष्य के सारे चिंतनशास्त्र वाणी पर ही आधारित है । भाक्तिमार्ग में वाणी से भगवान का नाम लेते रहने का उपदेश दिया गया है । वाणी में अद्‌भुत शक्ति होती है । वाणी से ही मित्रता होती है और वाणी से ही वैर भी होता है । हमारे सारे व्यवहारों का आधार वाणी ही है । इसलिए हमारी वाणी शुद्‌ध होनी चाहिए । इतना ही नहीं शुद्‌ध होने के साथ - साथ सभ्य भी होनी चाहिए । **2**

उ.1. (ग) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर लिखिए । **1**

i) लेखक ने स्वराज्य को सुराज में बदलने को सुखद स्वप्न बताया है ।

ii) **सही विकल्प चुनकर लिखिए ।** **1**

(1) हमें अरुचि है **हाथों से काम करने में ।**

(2) समाज के प्रति हमारा कर्तव्य है कि, **जितना उससे लेते हैं, उससे कई गुना श्रम करके उसे लौटा दें ।**

3) लगन और मेहनत से अपना काम करना ही श्रम कहलाता है । श्रम ही जीवन का आधार है । जहाँ श्रम है, वहीं स्वावलंबन है । जिस राष्ट्र के नागरिक श्रम करते हैं, वहीं प्रत्येक क्षेत्र में अग्रस्थान पाता है । पश्चिमी देशों की सुख - समृद्‌धि का रहस्य वहाँ के लोगों के कठोर परिश्रम में ही छिपा हुआ है । हमारे यहाँ के पढ़े - लिखे लोग श्रम से दूर भागने में ही बुद्‌धिमानी समझते हैं, हमारे देश के पिछड़ेपन का यही मुख्य कारण है । **2**

विभाग 2 - पद्‌य

उ.2. (च) पद्‌यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **1**

1) i) **आकृति पूर्ण कीजिए।**

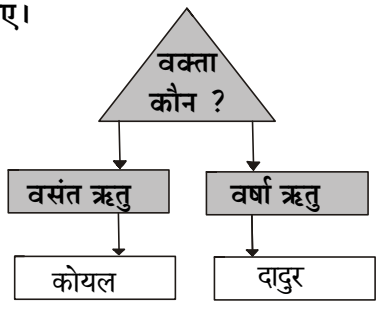

ii) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

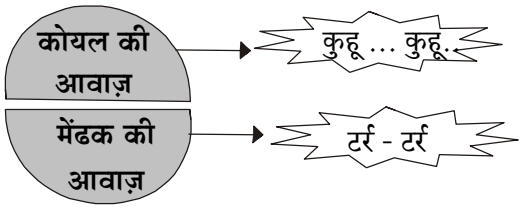

2) i) (1) मेंढक (2) कोयल **1**

ii) (1) प्रतिकूल परिस्थिति में चुप रहें। **½**

(2) जब उचित समय आए तब अपने विचार प्रकट करें। **½**

3) i) **समानार्थी शब्द लिखिए।**

(1) कोयल - कोकिल **½**

(2) मेंढक - दादुर **½**

ii) **विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।**

(1) वक्ता × श्रोता **½**

(2) मौन × वाचाल **½**

4) कवि रहीम के अनुसार मनुष्य को सही समय आने पर ही अपने गुण प्रकट करने चाहिए। वे कहते हैं कि प्रतिकूल स्थिति में हमें मौन धारण करना चाहिए। जिस प्रकार वर्षाऋतु आने पर मेंढक टर्र-टर्र करने लगता है और कोयल प्रतिकूल स्थिति भाँपकर मौन धारण कर लेती है। वर्षाऋतु के ऐसे प्रतिकूल समय में कोयल के गुणों को कोई महत्त्व नहीं देता। ऐसी परिस्थिति में कोयल का मौन धारण करना ही उचित होता है। **2**

उ.2. (छ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

ii) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

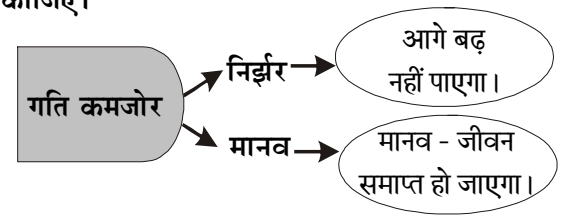

2) i) **समझकर लिखिए।**

(1) नाविक अपनी नाव पानी में नहीं उतारता है क्योंकि वह लहरों से डरता है। ½

(2) जीवन में उन्नति-अवनति होती रहती है। ½

ii) **उत्तर लिखिए।**

(1) जब उसकी गति रुक जाएगी। ½

(2) **सही शब्द चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।**
निर्झर का जीवन उसकी गति है। ½

3) i) **मानक वर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द लिखिए ।**

(1) निरझर - निर्झर (2) घड़िया - घड़ियाँ **1**

ii) **पद्यांश से तुकान्त शब्दों की जोड़ियाँ बनाकर लिखिए ।**

(1) पछताता है - जाता है ½

(2) जिस दिन - गिन - गिन ½

4) जीवन रूपी झरने की लहरें उठती -गिरती रहती हैं अर्थात् जीवन में उन्नति-अवनति आती रहती है। यदि किसी ने अपने जीवन में समय आने पर उसका सदुपयोग नहीं किया तो उसे उसी प्रकार से पश्चाताप भी करना पड़ता है, जिस प्रकार से लहरों से डरकर नाविक अपनी नाव झरने में नहीं उतारता है। इस प्रकार जीवन रूपी झरना अपनी जवानी की राह पर आगे बढ़ता ही जाता है। **2**

विभाग - 3 - पूरक पठन

उ.3. **परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।** **(4)**

1) i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

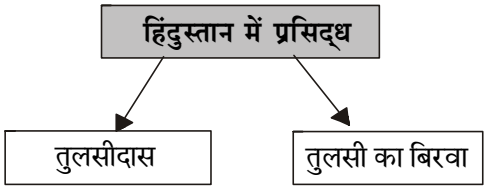

ii) **उत्तर लिखिए।**

(1) इटली और ग्रीस के लोगों को । ½

(2) चूहे और कीड़े को । ½

2) तुलसी को हमारे घरों में देवी का रूप माना जाता है और यह हर प्रकार से पवित्र है। ऐसा माना जाता है कि जिस घर में तुलसी लगाई जाती है उस घर में भगवान वास करते हैं। तुलसी एक ऐसी वनस्पति है जो धार्मिक हिन्दू समुदाय में बहुत ही महत्त्वपूर्ण औषधि के रूप में प्रयोग की जाती है। तुलसी केवल हमारी आस्था का प्रतीक भर नहीं है। इस पौधे में पाए जाने वाले औषधीय गुणों के कारण आयुर्वेद में भी तुलसी को महत्त्वपूर्ण माना गया है। बच्चे, बूढ़े, औरतें और आदमी सभी तुलसी के सेवन से लाभ उठा सकते हैं। भारतीयों के लिए यह गंगा-यमुना के समान पवित्र है, तुलसी की हिंदू संस्कृति में पूजा की जाती है। कार्तिक शुक्ल एकादशी को तुलसी पूजन का उत्सव मनाया जाता है। **2**

विभाग - 4 - व्याकरण

उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **निम्नलिखित शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** ½

दार्शनिक - स्वामी विवेकानंद दार्शनिक थे ।

ii) **अधोरेखांकित शब्द का भेद पहचानिए।** ½

संघर्ष - भाववाचक संज्ञा

2) i) **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए।** **1**

सबने आखिर चैन <u>की</u> साँस <u>ली</u> ।

3) i) **सहायक क्रिया का वाक्य में प्रयोग कीजिए।** ½

शुक्ल जी अपनी कविता का आरंभ करने लगे ।

ii) **सहायक क्रिया छाँटकर लिखिए ।** ½

आए (आना) सहायक क्रिया

4) **प्रेरणार्थक क्रिया के रूप लिखिए ।** **1**

मूल क्रिया	**प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया**	**द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया**
देखना	दिखाना	दिखवाना

5) i) **अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **1**

अलावा - गनपत के <u>अलावा</u> कोई ऐसा नहीं करेगा ।

ii) **अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए ।** **1**

कि - समुच्चयबोधक अव्यय ।

6) **कालपरिवर्तन कीजिए ।** **2**

चपरासी खीझ जाता है ।

वह रोते हुए कहेगा ।

7) i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए ।** **1**

पता चलना - खबर होना ।

वाक्य : सुबह सभी को पता चला कि कल रात यहाँ चोरी हुई है ।

ii) **अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए ।** **1**

मानसून की वर्षा आरंभ हुई तब कहीं जाकर किसानों की जान में जान आई ।

विभाग - 5 - रचना

उ.5. **परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :** **5**

1) **निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।**

दिलीप चौधरी
15 - अ, शिवपुरी,
नाशिक ।
दिनांक - 06 अक्टूबर,2017

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाध्यापक जी,
महात्मा गांधी विद्यालय,
महात्मा गांधी रोड,
नाशिक ।

विषय : चार दिन की छुट्टी के लिए आवेदन पत्र ।

माननीय महोदय,

मैं दिलीप चौधरी, कक्षा दसवीं 'अ' में पढ़नेवाला छात्र हूँ । मेरा उपस्थिति क्रं. 21 है । नाशिक में 8 अक्टूबर 2017 से 11 अक्टूबर 2017 तक राज्यस्तरीय शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है । इस प्रतियोगिता में राज्य भर से चुने हुए खिलाड़ी भाग लेने आ रहे हैं । मैं भी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहता हूँ ।

अत: आप से प्रार्थना है कि आप हमें इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए दि. 8 अक्टूबर 2017 से 11 अक्टूबर 2017 तक अवकाश देने का कष्ट करें । इन दिनों में पढ़ाई का जो नुकसान होगा, मैं उसे पूरा कर लूँगा ।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।

धन्यवाद !

आपका आज्ञाकारी छात्र,
दिलीप चौधरी ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाध्यापक जी,
महात्मा गांधी विद्यालय,
महात्मा गांधी रोड,
नाशिक ।

प्रेषक
दिलीप चौधरी
15 - अ, शिवपुरी,
नाशिक ।

अथवा

मिथिल शिंदे,
(छात्र प्रतिनिधि)
प्रबोधिनी विद्यालय,
जयसिंगपुर ।
दिनांक - 06 अक्टूबर,2017

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
क्वालिटी स्पोर्ट्स,
तिलक रोड, पूणे ।

विषय : **क्रीड़ा साहित्य न पहुँचने के संदर्भ में शिकायत पत्र ।**

माननीय महोदय,

बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि आपके क्वालिटी स्पोर्ट्स से क्रीड़ा साहित्य मँगवाने के लिए हमने आप को एक सूची भेजी थी । आपके द्वारा भेजी गई साहित्य (सामग्री) कल ही हमें प्राप्त हुई परंतु उसमें सूचीनुसार साहित्य नहीं है । हमारे लिखे हुए साहित्य की जगह पर आप ने कुछ और ही साहित्य भेज दिया है । मैं आपके द्वारा गलत भेजी गई साहित्य और उसके कैशमेमों का झेराक्स आपको वापस भेज रहा हूँ ।

कृपया आप हमारे सूचीनुसार क्रीड़ा साहित्य जल्द से जल्द भेजने का कष्ट करें ।

धन्यवाद !

भवदीय,
मिथिल शिंदे ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
क्वालिटी स्पोर्ट्स,
तिलक रोड, पूणे ।

प्रेषक
मिथिल शिंदे
(छात्र प्रतिनिधि)
प्रबोधिनी विद्यालय,
जयसिंगपुर ।

2) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में कहानी लिखकर शीर्षक दीजिए । **5**

'बचत का महत्त्व'

सुबोध नाम का एक मजदूर था । वह सुबह से शाम तक मजदूरी करता । शाम को काम से छूटने पर उसे जो पैसा मिलता उसी पैसे से बनिए की दूकान से चावल खरीदता । चावल लेकर घर आता उसे बनाता और खाता । वह ऐसे ही नित्य मजदूरी करता और अपना भेट भरता था ।

एक दिन बनिए ने सुबोध को सलाह देते हुए कहा कि तुम बचत करना सीखो । रोज चावल में से थोड़ा सा चावल निकाल कर रख लिया करो । जब कभी किसी कारण बस तुम काम पर नहीं जापाओगे तब यह चावल तुम्हें खाने के काम आएगा । सुबोध ने बनिए की बात को अनसुना कर दिया । अब बनिया मजदूर को चावल देते समय खुद ही उसमें से एक मुट्ठी चावल निकाल कर अलग रख लेता ।

कुछ दिनों के बाद सुबोध अचानक किसी कारण वस काम पर नहीं जा सका । शाम को बनिए की दूकान पर वह चावल उधार लेने पहुँचा ।

बनिए ने उसे दो किलो चावल सौंपते हुए कहा, ''उधार की कोई जरुरत नहीं । यह आपका ही चावल है जिसे हमने बचा कर रखा था ।'' मजदूर को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने भी बचत करने का प्रण लिया ।

सीख : इस कहानी से यह सीख मिलती है कि हमें अपनी आमदनी में से थोड़ा बचत करके रखना चाहिए जो हमारे मुश्किल दिनों में काम आए ।

3) निम्नलिखित गद्यखंड को ध्यानपूर्वक पढ़कर पाँच प्रश्न तैयार कीजिए, जिनका उत्तर एक वाक्य में लिखा जा सके । **5**

(1) संसार में कौन - सी तीन बातें बड़ी महत्तवपूर्ण हैं ?
(2) किस ज्ञान को प्राप्त कर तुम संसार के किसी भी कोने में जाओगे तो अपना निर्वाह कर सकोगे ?
(3) अक्षर ज्ञान किसलिए होता है ?
(4) हमें क्या याद रखना है ?
(5) अमीरी और गरीबी की तुलना में कौन अधिक सुखद है ?

उ.6. 1) **विज्ञापन : (लगभग 60 से 80 शब्दों में)** **5**

एच.डी.एफ.सी., एस.बी.आई.
बैंक में चेक पिक-अप के लिए
सेंट्रल, वेस्टर्न, हार्बर एरिया के लिए जानकार लड़के चाहिए ।
फिक्स 5000/- + इंसेंटिव, कमाएँ 8000/-
बायोडेटा के साथ मिलें :
हॅप यूनाइटेड प्रा. लि., ऑफिस नं. 2. शुक्ला हाउस,
गार्डन के बाजू में, चारकोप, कांदिवली (प.), मुंबई - 400 067.
फोन : 6451 9192 / 6221 1111

2) स्वमत : (लगभग 60 से 100 शब्दों में) **5**

यातायात की समस्या सभी के लिए परेशानी का कारण बन चुकी है । सभी इस समस्या से तंग आ गए हैं । आज अन्य मोटर-वाहनों के साथ मोटरसाइकिलों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि हर दिन यातायात के समय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है । यातायात के नियमों का पालन नहीं हो रहा है । आज सड़कों पर गाड़ियाँ ही गाड़ियाँ दिखाई दे रही हैं। इसी कारण आज का आम आदमी घूमने जाने के लिए भी कतरा रहा है । सरकार की ओर से यातायात की समस्या को हल करने के लिए कई प्रकार की योजनाएँ कार्यान्वित की गई हैं किंतु गाड़ियों की संख्या में आए दिन वृद्धि हो रही है । उनसे निकलनेवाला धुआँ वायु-प्रदूषण फैलाता है । हमें इस समस्या पर गंभीरता से विचार करना चाहिए ।

3) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :- (लगभग 60 से 100 शब्दों में) **5**

1) **<u>बूढ़े किसान की आत्मकथा</u>**

आइए, बाबूजी, बैठिए । शीतल जल पीजिए । मैं एक बूढ़ा किसान हूँ । लोग मुझे 'अन्नदाता' के नाम से पुकारते हैं । मैं गाँव में साधारण-सी झोपड़ी में रहता हूँ । आपके शहर में कितना भी बदलाव आ गया हो, पर भारत का किसान आज भी अपनी संस्कृति को नहीं भूला है। मैं अतिथि को देवता मानता हूँ । आप मेरी रामकहानी सुनना चाहते हैं, तो सुनिए ।

मेरा छोटा-सा परिवार है, और हम सब हमेशा खेती के कार्य में जुटे रहते हैं । मैं सुबह हल-बैल लेकर खेत पर चला जाता हूँ । मुझे सर्दी, गर्मी, आँधी या तूफान की परवाह नहीं है क्योंकि जन्म से ही मैं इन सारी परिस्थितियों का सामना करता आया हूँ ।

मैं खेत पर अनेक प्रकार के काम करता हूँ । जैसे-खुदाई, जुताई, बुआई और बाद में सिंचाई का काम भी मुझे ही करना पड़ता है । दोपहर को मैं खाना खाता हूँ और बैलों को भी घास खिलाता हूँ ।

श्रम ही मेरा जीवन है । चाहे आसमान में चिलचिलाती धूप हो या हड्डियों को कँपा देने वाली सर्दी हो या जोरों की बारिश । मेरा काम कभी रुकता नहीं । मुझे सबके पेट भरने की चिंता लगी रहती है । खेत में फसल पकने पर उसके चोरी हो जाने का या जंगली जानवरों से नष्ट होने का भय लगा रहता है । अत: मुझे रखवाली के लिए रात भर खेत पर रहना पड़ता है । मेरे इस काम में मेरा पुत्र व पत्नी साथ देते हैं ।

अब जमाना बदल गया है । हम लोगों के जीवन में काम करने के तरीकों में तथा अनाज आदि संग्रह करने तथा उसे बेचने आदि के संबंध में अनेक सुविधाएँ प्राप्त होने लगी हैं । पहले ये सब नहीं थे। जमींदार और धनी लोग हमारा शोषण करते थे और हम हमेशा कर्ज में डूबे रहते थे । अब हमें सरकार की तरफ से अच्छे बीज, बैल खरीदने के लिए उधार पैसा (लोन के रूप में) और अन्य अनेक सुविधाएँ भी मिलने लगी हैं । अब जगह-जगह यंत्रों से खेती होने लगी है । इसमें श्रम कम करना पड़ता है और अधिक फसल मिलती है, कृत्रिम खाद, तथा विविध कीटनाशक दवाइयाँ भी मिलने लगी है, नहर, ट्यूबवेल आदि से अब पैदावार में चार-चाँद लग गए हैं ।

कम ब्याज से मिलने वाली रकम ने हमारे जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन कर दिया है । सरकार ने हमारे स्वास्थ्य के लिए अनेक अस्पताल तथा बच्चों की शिक्षा के लिए अनेक विद्यालय खोल दिए हैं । इतना ही नहीं अब दूर-दूर तक गाँवों में टी.वी.(दूरदर्शन) की सुविधा भी मिलने लगी है । जिसके माध्यम से मनोरंजन ही नहीं अनेक प्रकार की जानकारी भी प्रदान की जाती है ।

अब सरकार का ध्यान हम किसानों के ऊपर बना रहता है । जिससे समय-समय पर कृषि से संबंधित जानकारी ग्रामसेवक, ग्रामप्रधान द्वारा मिलती रहती है । इस वर्ष तो सरकार ने किसानों के कर्ज को माफ करके बहुत रहम दिखाई है ।

शिक्षा के प्रचार-प्रसार से धीरे-धीरे अंधश्रद्धा और भ्रमपूर्ण बातों तथा पुराने रीति-रिवाजों से भी निजात मिलने लगी है । पंचायतों की स्थापना हुई है तथा अनेक तरह की समस्याओं शराब, जुआ आदि के विरुद्ध भी कई प्रकार के कार्यक्रमों से हमें तथा हमारे भाइयों को लाभ हुआ है ।

जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान.....”

2) **<u>विज्ञान : वरदान या अभिशाप</u>** **5**

यह ऐसा ही प्रश्न है, जैसे कि यह पूछना – शक्ति हमारे लिए गुणकारी है या हानिकारक ? आग हमारे लिए शुभ है या अशुभ ? वास्तव में विज्ञान एक शक्ति है, जिससे किसी के अँधेरे घर में उजाला भी किया जा सकता है और किसी उजले भवन का चिराग बुझाया भी जा सकता है । विज्ञान जीवन रक्षक भी है और जीवन-भक्षक भी । पहले हम इसके वरदान रूप पर विचार करते हैं ।

‘आर्केडियन फरार’ लिखते हैं, विज्ञान ने अंधों को आँखें दी हैं और बहरों को सुनने की शक्ति। उसने जीवन को दीर्घ बना दिया है, भय को कम कर दिया है । उसने पागलपन को वश में कर लिया है और रोग को रौंद डाला है । यह उक्ति सत्य है । विज्ञान की सहायता से चिकित्सा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण वरदान प्राप्त हुए है । उन्नत दवाइयों और मशीनों की सहायता से आज महामारियों पर काबू पा लिया गया है । असाध्य रोगों के इलाज ढूँढ़ लिए गए हैं । कई बीमारियों को समूल नष्ट कर दिया गया है। लूले-लंगड़ों को नए अंग तक लगाने का प्रबंध किया गया है । आँखें, फेफड़ों तथा खून तक बदलने की व्यवस्था हो गई है । अकाल मृत्यु-दर कम कर ली गई है ।

सुविधाओं के वरदानों की कहानी अनंत है । विज्ञान की सहायता से पूरी दुनिया एक परिवार बन गई है। जब चाहे, तब मनुष्य अपने प्रियजनों से बात कर सकता है । घंटे भर में दुनिया का चक्कर लगा सकता है। विज्ञान ने समय और श्रम को बचाकर मनुष्य का जीवन सँवार दिया है ।

विज्ञान ने दूरदर्शन, रेडियो, वीडियो, ऑडिओ, चलचित्र आदि के द्‌वारा मनुष्य के नीरस जीवन को सरस बना दिया है । हम इनके द्‌वारा देश-विदेश की खबरें, जानकारियाँ घर बैठे ले सकते हैं ।

विद्‌युत के प्रकाश और शक्ति ने तो विश्व को चमत्कृत कर दिया है। एक ओर बिजली अंधकार को दूर करती है तो दूसरी ओर घर को वातानुकूलित बना देती है । आज विद्‌युत के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं हो सकती ।

धरती पर रहने वाला मानव व्योम-पुत्र (आकाश-पुत्र) बन गया है। उसने चंद्रमा पर तो कदम रख ही लिए हैं । शुक्र, मंगल एवं अन्य ग्रहों तक पहुँचने के लिए भी कृत संकल्प है । विभिन्न प्रकार के उपग्रह आदि आकाश में स्थित निरंतर हमें अनेक सूचनाएँ भेजते रहते हैं ।

धरती के गर्भ में छिपी हुई प्राकृतिक संपदा तेल, कोयला और धातुएँ अब वैज्ञानिकों की नजरों से छिपी नहीं रही ।

इतनी सुख-सुविधाएँ होने के बावजूद मनुष्य का जीवन आज सुखमय होते हुए भी अशांत क्यों है ?

चरमोन्नत जग में जबकि आज विज्ञान ज्ञान ।
बहुभौतिक साधन, यंत्र यान वैभव महान ।।
सेवक हैं विद्‌युत वाष्प शक्ति धन बल नितांत ।
फिर क्यों जग में उत्पीड़न ? जीवन क्यों अशांत ?"

विज्ञान के अभिशापों की सूची लंबी न सही खरतनाक अवश्य है। विज्ञान का सबसे बड़ा खतरा है – पर्यावरण-प्रदूषण । अधिक उत्पादन, अधिक औद्‌योगीकरण, प्रकृति से छेड़छाड़, शहरी सभ्यता का अंधाधुंध विकास-विज्ञान की ही देन है । आज प्रदूषण इस हद तक फैल गया है, पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व का भय उत्पन्न हो गया है । ओजोन पर्त में छिद्र हो जाना वायु-प्रदूषण का अभिशाप है ।

आज का विज्ञान-भोगी मानव स्वार्थी, छली, चालाक और विलासी हो गया है । दया, मानवता, श्रद्‌धा, आदर कोमलता जैसे मानवीय गुणों से उसका नाता टूट गया है :-

लोग संगमरमर हुए, हृदय हुए इस्पात ।
बर्फ हुई संवेदना, खत्म हुए सब जज़्बात ।।"

विज्ञान ने मानव को मशीनों और सुखों का दास बना दिया है । उसकी प्राकृतिक शक्ति छीनकर उसे असहाय सा कर दिया है । विज्ञान का विवेकहीन प्रयोग कभी भी धरती को जीवन की हरियाली से वंचित कर सकता है । सच बात यह है कि विज्ञान के सदुपयोग या दुरुपयोग को वरदान या अभिशाप कहते हैं । विज्ञान का संतुलित उपयोग जीवनदायी है । उसका अंधाधुंध दुरुपयोग विनाशकारी है ।

❖❖❖❖